

वार्तालाप सी.डी. नं. 496, फर्रुखाबाद (यू.पी) ता-20.01.08  
Disc.CD No.496, dated 20.01.08 at Farrukhabad (Uttar Pradesh)

समय –00.15–05.35

जिज्ञासु –बाबा, जो दिखाते हैं ना पृथ्वी के आसपास जो परत है, ओजोन की उसमें एक छेद हो गया है तो सूर्य की आल्ट्रावायलेट जो रेज हैं वो धरती पर सीधी पड़ने से जिसका इफेक्ट पृथ्वीवासियों पर गलत पड़ेगा। माना तरह-तरह की बीमारियां आयेंगी। तो इसका मतलब ज्ञान से भी कोइ कनेक्शन है क्या?

**Time: 00.15-05.35**

**Student:** Baba, they show that a hole has been made in the ozone layer around the Earth. So, when the ultraviolet rays of the Sun start falling directly on the Earth it will have a negative effect on the inhabitants of Earth, i.e., they will suffer from different kinds of diseases. So, I mean to ask whether there is any connection with knowledge as well.

बाबा – उसका नाम दिया है ओजोन। पृथ्वी पर जो सूर्य की किरणें पड़ती हैं वो अगर सीधी पड़े बीच में ओजोन का पर्दा न हो तो बहुत नुकसान होगा। होता है। वो तो दुनियावी स्थूल बात है, स्थूल सूरज है और उसकी स्थूल परत है और पृथ्वी भी स्थूल है लेकिन यहां ब्राहमणों की दुनिया में ज्ञानसूर्य भी चैतन्य है और ज्ञानसूर्य की ओजोन। कहते हैं ना ओजस्वी, तेजस्वी, वीर्यवान ओज से भरा हुआ। ऐसे ओजस्वी वातावरण ओज के प्रभाव से जो दूर होंगे उनको नुकसान हो जावेगा। बाहर की दुनिया में भी नुकसान हो रहा है और ब्राहमणों की दुनिया में भी नुकसान हो सकता है/हो रहा है।

**Baba:** It has been named ozone. The sunrays that fall on the Earth, if they fall on the Earth directly, i.e. if there is no layer of ozone in between, then it will cause a lot of damage. It does cause [damage]. That is a worldly physical issue. It is the physical sun and it is a physical layer and the Earth is also physical. But here in the world of Brahmins, the Sun of knowledge is living as well as the O zone of the Sun of knowledge. It is said (about some people) , *ojasvi, tejasvi, viryavan*<sup>1</sup>; he is full of vigour (oz), isn't it? Those who remain far from such vigorous atmosphere, from the influence of vigour will suffer a loss. The outside world is also suffering loss and there can be a loss or there is loss in the world of Brahmins as well.

आज भी वाणी में बताया कुछ बच्चे हैं जो लव में लीन रहते हैं। बाप के लव में लीन कहो, ज्ञानसूर्य के लव में लीन कहो उनको मेहनत अनुभव नहीं होती। मोहब्बत में रहने के कारण सहज-सहज पुरुषार्थ के रास्ते में आगे बढ़ते जाते हैं परंतु जो उस मोहब्बत में नहीं रहते हैं, वो उस ज्ञानसूर्य के ओजस्वी प्रभाव से दूर हो जाते हैं और टेन्शन में आते रहते हैं। बेहद की बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। भूत-प्रेती आत्माओं के शिकार हो जाते हैं। तो उस ओजस्वी वातावरण के प्रभाव में रहना बहुत जरूरी है। उसका तरीका है – रोज अमृतवेले की स्पेशल याद। वो तब ही होगी जब ईश्वरीय

<sup>1</sup> An energetic person or a person full of vigor

सेवा में लगातार लगे रहेंगे। बाप का विरुद्ध है – जो सेवाधारी बच्चे हैं उनको मैं याद करता हूँ। ओजोस्वी वायुमण्डल के प्रभाव में आ जाते हैं। एक अमृतवेला, दूसरा सेवा। ये दो बातों का अगर पक्का अभ्यास रखेंगे तो नुकसान से बचे रहेंगे।

It was said in today's vani as well, that there are some children who remain immersed in love. Call it being immersed in the Father's love or the love of the sun of knowledge; such a person will not feel any difficulty. Because of being immersed in love, they continue to follow the path of spiritual effort easily, but those who are not immersed in that love remain away from the vigorous influence of that Sun of knowledge and continue to become tensed. They are affected by diseases in an unlimited sense. They are affected by the ghosts and devilish souls. So, it is very necessary to remain under the influence of that vigorous atmosphere. Its method is special remembrance at *amritvela*. That will happen only when you remain busy in service of God continuously. The Father has promised, I remember the *sevadhari* children (the serviceable ones). They come under the influence of the vigorous atmosphere. One is *amritvela*; the second is service. If you practice these two things firmly, then you will be saved from damage.

समय –06.00–07.00

जिज्ञासु – माताओं द्वारा स्वर्ग का गेट खोलते हैं और बोला है देवी के पुजारी रावण संप्रदाय। इसमें अंतर क्या है?

बाबा – बोलो।

जिज्ञासु –मातायें ही देवियां बनती हैं ना?

बाबा – हाँ-हाँ। स्वर्ग के गेट खोलने के निमित्त बनती हैं।

जिज्ञासु –तो फिर रावण संप्रदाय कैसे हो गये?

बाबा – लेकिन श्रीमत देने के निमित्त तो नहीं हैं? श्रीमत देनेवाला एक है या ढेर के ढेर शिव की शक्तियाँ हैं? एक जिससे श्रीमत मिलती है उसकी मत से पवित्र बनेंगे।

Time: 06.00-07.00

**Student:** (It has been said that) the gates of heaven (are opened through the mothers. And it has been said that the worshippers of devis belong to the Ravana community. What is the difference between them?

**Baba:** Speak up.

**Student:** It is the mothers who become devis, don't they?

**Baba:** Yes. Yes. They become instruments in opening the gates of heaven.

**Student:** So, then in what way do they belong to Ravana's community?

**Baba:** But they are not instruments for giving *shrimat*, are they? Is the giver of *shrimat* one or numerous *shaktis* of Shiv? You will become pure through the opinion of the one from whom *shrimat* is received.

समय – 08.40–17.10

जिज्ञासु –बाबा ब्रह्मा ने सृष्टि रची। तीन बार रची ना? अभी जो नई दुनिया रची गई है, जो रचा गया है वो तीसरी बार है या चौथी बार है?

बाबा – ब्रह्मा के लिए कहते हैं ब्रह्मा ने सृष्टि रची। एक बार रची पसंद नहीं आई बिगाड़ दी, दूसरी बार रची पसंद नहीं आई बिगाड़ दी, तीसरी बार रची फिर पसंद

नहीं आई बिगाड़ दी। ये गायन है। कहां का? संगमयुग का। 1936 में आदि ब्रह्मा के द्वारा संगठन तैयार हुआ ब्राह्मणों का। ब्राह्मणों की सृष्टि रची गई और पवित्रता की बात को लेकर के झगड़ा हो गया। दूसरी बार फिर सृष्टि रची गई और उसके लिए घोषणा भी कर दी। नाम क्या रखा गया? पहले नाम था ऊँ मंडली। दुबारा में नाम क्या रखा गया? ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय और उसकी घोषणा भी कर दी 10 वर्ष पहले। पुरानी सृष्टि का विनाश और नई दुनिया की स्थापना होगी। कौनसे सन् में? 76 में। तो ये भी विनाश हो गया।

**Time: 08.40-17.10**

**Student:** Baba, Brahma created the world. He created it three times, did he not? The new world that has been created now, is it the third one or the fourth one?

**Baba:** It is said about Brahma that Brahma created the world. He created it once; he did not like it; he destroyed it; he created it the second time; he did not like it; he destroyed it; he created it the third time; he did not like it again and he destroyed it. This is famous. About which time? The Confluence Age. The gathering of Brahmins was prepared through the first Brahma in 1936. The Brahmin world was created and a dispute broke up on the issue of purity. The world was created once again, for the second time. And then a declaration was also made. What was it named? Earlier the name was Om Mandali. What was the name given the second time? Brahmakumari Ishwariya Vishwa Vidyalaya. And a declaration [of its destruction] was also made 10 years before [its destruction]. 'Destruction of the old world and the establishment of the new world will take place'. In which year (will it happen)? In (19)76. So, this destruction also took place.

अंदर वाले रह जावेंगे और बाहर वाले ले जावेंगे। अंदर वाले माना जो भी सरेण्डर हैण्डस हैं वो रह गये और जो बाहर गृहस्थ व्यवहार में रहकर स्व पुरुषार्थ करते थे वो सब ले गये और अभी भी ले रहे हैं। एडवान्स ज्ञान में आ गये। उन सबका क्लास ट्रान्सफर हो गया। नया संगठन तैयार हो गया एडवान्स पार्टी और इस एडवान्स पार्टी में भी एक धर्म के बीज हैं या अनेकों धर्म के बीज हैं? अनेक धर्मों के बीज हैं। पता नहीं लग रहा है कौन किस धर्म का बीज है? फिर इसमें भी घोषणा कर दी कोई खास बच्चों के लिए। तीसरा संगठन हुआ ना उसमें फिर घोषणा कर दी। क्या घोषणा की? याद है? पहले ही बता दिया, एक भी पॉवरफुल संगठन तैयार होने पर जो एक गुप तैयार होगा वो गुप दूसरे गुप को खींचते हुए, दूसरे गुप्स को खींचते हुए अंत में 108 की माला का संगठन तैयार हो जावेगा।

The insiders will lose and the outsiders will win. The 'insiders' mean all the surrendered hands. They lost, and all those who lived outside in household and made spiritual efforts won and even now they are winning; they have entered the path of advance knowledge. All of them were transferred to another class. A new gathering, i.e. the advance party was ready and even within this advance party there are seeds of one religion or are there seeds of many religions? There are seeds of many religions. We are not able to know who is a seed of which religion. Then a declaration was made about this (advance party) for some special children. It is the third gathering, isn't it? Again a declaration was made in it. What was the declaration? Do you remember it? It was already said, 'Even if one powerful gathering is ready, that one

group will pull the other groups and finally the gathering of 108 souls will be ready in the end’.

फिर ओर बोला – तुम बच्चों के लिए बापदादा ने नई दुनिया की सौगात दे दी है। तो नई दुनिया छोटी होगी या बड़ी होगी? सौगात तो दी है लेकिन उस नई दुनिया को स्वर्ग नहीं कहेंगे अभी। हाँ, स्वर्ग का फाउन्डेशन कहेंगे। जैसे फाउन्डेशन डाला जाता है जमीन खोद के अन्डरग्राउन्ड में कंकड़, पत्थर सब डाले जाते हैं। दुरुमुट चलता है तो कोई इधर-उधर हो जाते हैं और कोई स्थाई हो कर के जम जाते हैं। ऐसे ही नई दुनिया का फाउन्डेशन पड़ गया, नई दुनिया नहीं बन गई। कोई मकान की नींव डाली जाती है, उसे नया मकान नहीं कहते, नींव के उपर जब पहली मंजिल तैयार होती है तो कहते हैं नया मकान हो गया। ऐसे ही अब नई दुनिया की प्रत्यक्षता होने वाली है, चौथी बार ये जो संगठन बनेगा वो स्थाई हो जावेगा क्योंकि सतयुगी देवता वर्ण की आत्माओं की शूटिंग, त्रेतायुगी क्षत्रीय वर्ण की आत्माओं की शूटिंग और द्वापरयुगी वैश्य वर्ण की आत्माओं की शूटिंग और कलियुगी शूद्र वर्ण की आत्माओं की शूटिंग ये चारों अवस्थाओं की शूटिंग में जब तक पसार नहीं होते हैं ब्राह्मण तब तक नई दुनिया का फाउन्डेशन नहीं पड़ सकता। अब ये काम पूरा हुआ।

Then it was also said, ‘Bapdada has given a gift of new world for you children’. So, will the new world be small or big? The gift has been given, but that new world cannot be called heaven at present. Yes, it can be called the foundation of heaven. For example, when a foundation is laid by digging up the earth, pebbles, stones are put underground. When the (crusher) *durmut* is used, some fall here and some fall there and some remain steady and become embedded. Similarly, the foundation for the new world was laid; the new world was not established. If the foundation for a house is laid, it is not called a new house. When the first floor is built on the foundation, then it is said that the new house is ready. Similarly, now the new world is going to be revealed; the gathering that will be prepared for the fourth time will become permanent because until Brahmins pass through the shooting of the Golden Age deity class, the shooting of the soul of the Silver Age Kshatriya class, and the shooting of the Copper Age Vaishya class souls and the shooting of the Iron Age Shudra class souls, the foundation for the new world cannot be laid. Now this task is complete.

सन् 76 तक 40 वर्षों में देवता वर्ण की आत्माओं की शूटिंग हुई, 87-88 तक 12 वर्षों में क्षत्रीय वर्ण की आत्माओं की शूटिंग हुई, 98 तक 8 वर्षों में वैश्य वर्ण की आत्माओं की शूटिंग हुई और 2003-04 तक कलियुगी शूद्र वर्ण आत्माओं की तामसी शूटिंग भी हुई। अभी 2004 के बाद जो भी टाइम चल रहा है, वो उस मूर्ति को निमित्त बनना है जो आखरीन प्रैक्टिकल नई दुनिया तैयार कर दिखावेगी। वो समय अभी जल्दी नजारे में सामने में आने वाला है। शास्त्रों में यादगार बनी हुई है, कथायें बनाए दी हैं कि ब्रह्मा ने एक बार सृष्टि रची, दूसरी बार रची, तीसरी बार रची और बिगाडते गये लेकिन अभी ये चौथी बार जो रचना हो रही है ये बिगड़ने वाली नहीं हैं क्योंकि चुनिंदा आत्मायें चुन ली गईं। ये उन आत्माओं का फाउन्डेशन है जो धर्मराज से कोई भी सज़ा नहीं खाती। बाकी सब पापकर्म करने वाले हैं, सज़ा खाने वाली आत्माओं के संगठन प्रत्यक्ष हुए वो ब्रह्मा को पसंद नहीं आये।

The shooting of the souls of deity class took place for 40 years until (19)76, the shooting of Kshatriya class souls took place for 12 years until 87-88; the shooting of Vaishya class souls took place for 8 years until (19)98 and the degraded shooting of Iron Age Shudra class souls also took place till 2003-04. After 2004, in the present time that is going on, that deity (*murti*), which will ultimately prepare the new world in practical has to become instrument. That time is now going to come before us soon. There are memorials in the scriptures, stories have been written that Brahma created the world first time, the second time, the third time, and then he went on destroying them, but now the creation that is taking place for the fourth time is not going to be destroyed because 'chosen souls' have been selected. This is a foundation of those souls which do not suffer punishments at the hands of Dharmaraj. All the other gatherings that were revealed were of souls who commit sins; who suffer punishments; they were not liked by Brahma.

समय –17.15–18.30

जिज्ञासु – पियु की वाणी जो चलती थी पियु की वाणी के बारे में बोलते हैं कि जो सामने कन्यायें मातायें बैठती थी वो वाणी सुनकर के डर जाती थी। तो क्या ये सही है?

बाबा – अभी भी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ क्या कहते हैं? जो एडवान्स के जो भाँति हैं उनसे अभी भी कहते हैं कि आपके बाबा की वाणी बड़ी खरी है, बहुत कडक बोलते हैं। जो आदि में सो अंत में। अभी तो उतनी कडक नहीं है, आगे चलकर और भी कडक वाणी सुनावेंगे। जैसे अर्जुन ने कहा – बस-बस। बंद करो। हम नहीं देख सकते, हम नहीं सुन सकते।

**Time: 17.15-18.30**

**Student:** Piu's Vani which used to be narrated; it is said about the Piu's vani that the virgins and mothers who used to sit in front of him used to be frightened on listening to it. So, is it true?

**Baba:** Even now, what do the Brahmakumar-kumaris say? Even now they tell the members of advance (party) that your Baba's Vani is very hard-hitting; he speaks very sternly. Whatever happened in the beginning will happen in the end. Now it is not so strict. In future, stricter vani will be narrated. For example, Arjun said: Enough, enough; stop it. I cannot see; I cannot listen.

समय –21.00–21.35

जिज्ञासु – बाबा शास्त्रों में जो नाम हैं वो काम के आधार पर पड़े हुए हैं।

बाबा – जैसा काम किया वैसे नाम पड़े।

जिज्ञासु – विदुर का क्या अर्थ है?

बाबा – विधाता की बातें बोलता होगा। विदु माने वि माना विशेष। विदु माना विशेष रूप से जानकारी देने वाला। विशेष ज्ञानी उसको कहते हैं विदुर।

**Time: 21.00-21.35**

**Student:** Baba, the names mentioned in the scriptures are on the basis of the tasks performed.

**Baba:** The names were based on the tasks performed.

**Student:** What is the meaning of Vidur?

**Baba:** He (i.e. Vidur) must be speaking about *Vidhata* (knowledge). *Vidu* means, *vi* means *vishesh* (special). *Vidu* means the one who gives special information. The one who is especially knowledgeable is called Vidur.

**समय –26.01–28.15**

जिज्ञासु –परमधाम में निराकार शिव को दिखाते हैं। उसके नीचे तीन आत्माओं को दिखाते हैं। उसके बाद दो आत्माओं को दिखाया, फिर आठ गुप्स बनाये ना। तो उसका अर्थ क्या है, पूछ रहे हैं।

बाबा – उसका अर्थ यही है शिव निराकार ज्योतिर्बिंदु जब आते हैं तो पहले तीन निराकारी, आकारी स्टेज धारण करने वाली आत्माओं को चुनते हैं। जो सारे विश्व की मुखिया है। ब्रह्मा नीचे तबके का, विष्णु मिडियम तबके का और शंकर ऊँचे तबके का। तीनों प्रकार की आत्माओं को चुनकर के पहले उनकी आकारी, निराकारी स्टेज बनाते हैं। फिर उनसे अष्टदेवों की रचना होती है। जैसे अभी अव्यक्त वाणी में घोषणा की – तीन सीट्स फिक्स हुई हैं। पहले आठ का जिक्र किया या पहले तीन का जिक्र किया? पहले तीन का जिक्र किया। माना तीन मूर्तियाँ पहले स्थिर होती हैं, फिर तीन मूर्तियों में जो पहली मूर्ति है – ज्ञानसूर्य – उससे आठ उदय होते हैं। उन आठ में से जो आठ सहयोगी आत्माये बनती हैं उनमें से पहला युगल वो लक्ष्मी–नारायण के रूप में दिखाया गया है। बाकी नम्बरवार दिखाये गये हैं नीचे। उँची स्टेज वाली आत्मायें दिखाई गई हैं देवी–देवता सनातन धर्म की।

**Time: 2601-28.15**

**Student:** Incorporeal Shiv is shown in the Supreme Abode. Below Him, three souls are depicted; after that two souls have been shown; then eight groups have been formed; so he is asking, what does it mean?

**Baba:** It means that when incorporeal point of light Shiv comes, first He selects three souls which assume incorporeal, subtle stage, who are the chiefs of the entire world. Brahma belongs to the lower section, Vishnu to the medium section and Shankar to the higher section. He selects all the three kinds of souls and first enables them to assume the subtle, incorporeal stage. Then eight deities are created through them. For example, it has been announced in the Avyakta Vani that three seats have been fixed. Was there a mention of eight first or three first? First, three were mentioned, i.e. three murty (deities) become constant first; then from the first one among the three murty, i.e. from the Sun of knowledge the eight emerge. Among those eight... those who become the eight helpful souls, the first couple has been shown in the form of Lakshmi-Narayan. The remaining have been shown numberwise below. Souls belonging to the Ancient Deity Religion with a higher stage have been shown.

**समय –28.16–30.20**

जिज्ञासु –बाबा जो पियु की वाणी बक्से में बंदकर के वो गड्ढे में कर के ढक दिया गया है तो क्या अंत में निकाल कर के उसका क्लारिफिकेशन मिलेगा?

बाबा – ब्राहमणों का कोई भी कर्म व्यर्थ जाता है क्या? नहीं जाता है। ब्राहमणों ने जिस लक्ष्य से जो काम किया है, भल नर चाहत कछु और है होवत है कछु और। उस समय जो थे रखने वाले उन्होंने इस दृष्टिकोण से रखा ये वाणी द्वापरयुग में काम आवेगी परंतु उनको ये तो पता ही नहीं है जब विनाश होता है तो सृष्टि का अणु-अणु अपने स्थान से विचलित हो जाता है। अभी की रखी हुई वाणी कोई द्वापरयुग में नहीं निकलेगी। ये तो यहाँ निकलनी है जिससे सारे राज खुलेंगे। और?

जिज्ञासु –67-68 की वाणी उनको ऐसे लोटते हैं तो टूट जाती हैं, इतनी कमजोर उनका कागज हो गई है।

बाबा – आजकल ये पत्ते फिर भी ज्यादा से ज्यादा 70 साल 80 साल पुराने होंगे। लेकिन जो भोजपत्र हैं वो हजारों साल पुराने हैं और परत बाई परत बनाकर रखे गये। फिर ऐसे-ऐसे यंत्र बनाये हैं उन यंत्रों से वो सारा पढ़ लेते हैं और उनको सुरक्षित कर के रख देते हैं। ये कोई बड़ी बात नहीं है।

जिज्ञासु –वो वाणियाँ भोजपत्र की ही थी क्या?

बाबा – भोजपत्र होते हैं कहीं कलियुग में ?

**Time: 28.16-30.20**

**Student:** Baba, will the Piu's Vanis which have been put into a box and buried in a pit, be extracted in the end and will we get the clarification for the same?

**Baba:** Does any action of the Brahmins go waste? It does not. With whatever goal Brahmins have performed any task; although man proposes something but something else happens... Those who had kept it (in a box) at that time, had kept it thinking that the vani will prove useful in the Copper Age, but they do not at all know that when destruction takes place, every atom of the world moves from its place. The vani that has been placed (in a box somewhere) now will not emerge in the Copper Age. It has to emerge here [and] from it all the secrets will come out. Anything else?

**Student:** If we turn the pages of the Vanis of the year 67-68, they start are torn, their paper has become so delicate.

**Baba:** The pages available now-a-days must be at the most 70 or 80 years old. But the *bhojpatras* are thousands of years old and have been kept layer by layer. Then such machines have been prepared through which they read everything. Then they keep them safely. This is not a big issue.

**Student:** Were those Vanis in the form of *bhojpatras* itself?

**Baba:** Are there any *bhojpatras* in the Iron Age?

**समय –35.03–35.58**

जिज्ञासु – तो कलंकीधर का गायन क्यों है? झाडू तो मम्मा के हाथ से ही लगेगा जगदम्बा के हाथ से। फिर कलंकीधर का गायन क्यों है?

बाबा – कोई कलंक लगाने का पार्ट बजाता है, भगवान की भुजायें जो सहयोगी बनती हैं भगवान की, उन भुजाओं को काटता है और काटकर के अपनी लज्जा छुपाय लेता है। लज्जा छुप जाती है, भगवान के उपर कलंक लग जाते हैं। भगवान बड़े आराम से उन कलंको को धारण कर लेता है क्योंकि यही तरीका है, सृष्टि के विनाश का। चाहे कलंकीधर कहो और चाहे शंकर जी के छाती पर महाकाली का पाँव कहो, बात एक ही है।

**Time: 35.03-35.58**

**Student:** Baba, then why is Kalankidhar famous? If the process of cleaning (with a broom) has to be done through the hands of Mamma, through the hands of Jagdamba, then why is Kalankidhar famous?

**Baba:** Someone plays the role of leveling allegations (*kalank*); He cuts the arms of God, who become helpers of God and then preserves his honour (*lajja*) with those arms; the honour is preserved, but the allegations are transferred to God. God accepts those allegations very comfortably because this is the method of destruction of the world. Whether you call him *kalankidhar* or call it the placing of Mahakali's legs on the chest of Shankarji, it is one and the same.

**समय –40.20–44.20**

जिज्ञासु –बाबा 76 से रामवाली जो आत्मा हैं वो पावन बन गई ना।

बाबा – आत्मा के पावन हो जाने से मनुष्य पावन बन जायेंगे क्या? मनुष्य कहा जाता है आत्मा और शरीर दोनों का मेल। तो आत्मा पहले पावन बनती है या शरीर पहले पावन बनता है? आत्मा बनती है। तो आत्मा दिखाई थोड़े ही पड़ती है। ये तो अंदर की समझने की बातें हैं। जो समझू सयाने बच्चे होंगे वो आत्मा को समझ लेंगे, देख लेंगे। नहीं तो ना आत्मा दिखाई पड़ती है ना परमपिता परमात्मा दिखाई पड़ता है। समझू बच्चे रिगार्ड करेंगे परमात्मा बाप को समझ कर के। जो बेसमझ होंगे उनको इन आँखों से दिखाई ही नहीं पड़ेगा कि इस सृष्टि का मूल पुरुष कौन है? आदि पुरुष कौन है? और उसमें परमपिता कैसे कार्य कर रहा है? वो तो उल्टी बातें करेंगे, उल्टा व्यवहार करेंगे और उल्टे ही संकल्प करेंगे। इसलिए आत्मा पहले पवित्र बनती है। ज्ञान से। और शरीर पहले पवित्र बनता है या बाद में पवित्र बनेगा? बाद में शरीर पवित्र बनेगा। शरीर के पाँच तत्व भी पवित्र बनेंगे ही तब जब ये 500–700 करोड़ की दुनिया जो रावण संप्रदाय हैं दुष्ट संकल्प, दुष्ट भावनायें फैलाने वाली हैं, दुष्ट वातावरण बनाने वाली हैं वो सब आत्मायें शरीर छोड़ दें। उनके पाँच तत्व के बने हुए शरीर ही खलास हो जायें। तब जो मुट्ठी भर जो आत्माये रह जायेंगी इस सृष्टि पर उनसे शुद्ध शरीरों का निर्माण होगा। तब शुद्ध वातावरण बनेगा। तब कहेंगे आत्मा भी शुद्ध और शरीर भी शुद्ध। अभी सन् 76 से नहीं कहेंगे। सन् 76 तो शुरूआत है आत्मा की शुद्धि की।

**Time: 40.20-44.20**

**Student:** Baba, the soul of Ram has become pure since (19)76, hasn't it?

**Baba:** Will the human beings become pure if the soul becomes pure? The combination of a soul and a body is called a human being. So, does the soul become pure first or does the body become pure first? It is the soul which becomes [pure first]. So, a soul cannot be seen. These are things to be understood from within. The intelligent children will understand the soul; they will see (i.e. realize) it. Otherwise, neither the soul can be seen nor can the Supreme Soul be seen. Intelligent children will give regard to the Supreme Soul Father by realizing Him to be so. Those who are not intelligent will not be able to see through these eyes at all who is the first man (*aadi purush*) of this world. Who is the first man? And how the Supreme Father is working through him? They will talk in an opposite manner, they will act in an

opposite manner and they will think in an opposite manner. This is why it is the soul which becomes pure first through knowledge. And does the body become pure first or will it become pure later on? The body will become pure later on. The five elements of the body will become pure only when the world of 500-700 crores, which is the Ravana community, which spreads the wicked thoughts, wicked feelings, which creates a wicked atmosphere, all those souls should leave their body. Their body made up of the five elements should perish. Then the handful of souls which will remain in this world will create the pure bodies. Then a pure atmosphere will be built. Then it will be said that the soul as well as the body is pure. It cannot be said to be so from (19)76. (19)76 marks the beginning of the process of the purification of the soul.

जिज्ञासु –76 में लक्ष्मी-नारायण प्रत्यक्ष हुए। वो दो हो गये बोल रही है। माना दो आत्मार्ये पावन बन गई।

बाबा – वो मन्सा की बात है ना। मन-बुद्धि रूपी आत्मा की बात है या जिस शरीर में वो आत्मार्ये काम कर रही हैं वो शरीर की बात है? आत्मा की बात है। आत्मा को पहचानना ये ज्ञान की बात है। जो ज्ञानी आत्मार्ये हैं वो उस स्वरूप को पहचानती हैं। इस तमोप्रधान शरीर में, बड़े ते बड़े कामी कांटे में, बड़े ते बड़ा एवरप्योर बाप आया हुआ है। सब नहीं पहचानेंगे। न पहचानेंगे, न रिगार्ड देंगे, न देख पायेंगे और न उसकी बातों को सुन पायेंगे।

**Student:** Lakshmi-Narayan were revealed in (19)76. It is being said that both of them became (pure). It means that two souls became pure.

**Baba:** That is about the mind, isn't it? Is it about the soul which is in the form of mind and intellect or is it about the body through which those souls are working? It is about the soul. The knowledge is about recognizing the soul. The knowledgeable souls recognize that form. The ever pure Father has come in this degraded body, in the biggest lustful thorn. Everyone will not recognize Him. Neither will they recognize Him, nor will they give regard; neither will they be able to see Him nor will they be able to listen to His versions.

.....  
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

